होरी पचीसी

लेखक

चौधरी श्रीयदुनाथ ठाकुर "यादव"

प्रकाशक

चौधरी श्रीकौशलकिशोर ठाकुर

सिंहवाड़ स्टेट,

पो०—सिंहवाड़, दरभंगा

होरी पचीसी

(राम-जानकीक पचीस गोट)

लेखक
चौधरी श्रीयदुनाथ ठाकुर "यादव"

वसन्त-पञ्चमी, संवत् २००६

दू कथा

उपस्थित अछि, हमर ई अभिनव कृति। 'होरी पचीसी' क प्रत्येक गीत भिन्न राग ताल में आबद्ध अछि। स्वर, ताल, राग एवं रागिणीक जिम्मा छैन्ह गायक समाजक। हमरा ओहिसँ कोन प्रयोजन ? हम त केवल अपन भाव कैं छन्दोबद्ध कयल अछि। सन्तोष एतबे अछि जे होरी खेलयबाक स्थान अछि मिथिलाक पवित्र भूमि और खेलाइत छथि जगज्जननी जानकी एवं जगतपिता राम। तखन गुण-दोषक विवेचने किएक ? राम-नाम चीनीक लड्डू थिक, टेढ़ो मधुर सोझो मधुर।



यादव

होरी पचीसी

[१]

हट्ट छाड़ू कर सिय अति सुकुमारी रे ।
चूड़ी टूटि चुभि गेल, देखू धनुधारी रे ॥१॥
वलय कगन टूटि, मोतीलर टुटलई ।
गारी पढ़व सभ, मिथिला क नारी रे ॥२॥
विनय विनती हरि, कान नहिं धारथि ।
"यादव" चरण धरि, गेलौं हम हारी रे ॥३॥

[२]

खेलय जाथि रे कुमरि, रंग राम सँ लजित ।
संग शोभामयि सखिगण रतन सजित ॥१॥
निरखथि जनक सुनयना निरखथि ।
निरखथि पुर के बजित वेवजित ॥२॥
शोभा सुभग सखीगण निरखथि ।
"यादव" ललित कलित आ चकित ॥३॥

[३]

झट अएलौं हैं दौड़ि।
सुनि होरी के भनक ॥१॥

बीन मृदंग ढोल डफ बाजत।
मन मोहय कठताला के ठनक ॥२॥

राम निरखि मनताप शमित भेल।
श्रुति सियपद सुनि मधुर झनक ॥३॥

धन "यादव" धन मातु सुनयना।
धन मिथिलापति नृपति जनक ॥४॥

[४]

होरी खेलू कुमर मिथिला में सम्हरि।
कोमल अति मिथिलेश कुमरि ॥१॥

पीताम्बर कटि पाँच टका केर।
लाख हजारक लाल चुनरि ॥२॥

कहलहुँ देव नेह आँजुर भरि।
कहि पुनि जाएब लाल मुकरि ॥३॥

"यादव" राम-सिया चरणक रज।
पावि भुवन दुहु गेल सुधरि ॥४॥

६-२-६८

[५]

कुंकुम चद्रा कय मारल
रघुवरजी प्रिय सिया के ।।१।।

अजगुत ई प्रियतम कैलनि
सीता सुनरि रँगि देलनि ।
की कहिअनु सियक पिया के
रघुवरजी प्रिय सिया के ।।२।।

हम दशरथ-सुत के डटलहुँ
"यादव" लज्जित भय हँसलहुँ ।
अति शोभा जनक-धिया के
रघुवरजी प्रिय सिया के ।।३।।

[६]

गगरिया रे, ढारि देलथिन गगरिया ।
सुनरिया रे, भीजि गेलइ सुनरिया ।।१।।

प्रियतम रघुवर अति मन भावन ।
झगरिया रे, कोना करितहुँ झगरिया ।।२।।

"यादव" मुदित राम सिय खेलथि ।
नजरिया रे, लागि गेलइ नजरिया ।।३।।

[७]

राम सिया खेल करथि, जनकजीक आँगना ।।१।।
खन खन सर चाप बजत, झन झन झन झागना ।
रंग झरय झहर झहर, खेलथि दुहु फागना ।।२।।
समधी दशरथ सदेह, मिथिला के पति विदेह ।
सजनी मिथिलेश कुमरि, रघुकुलमणि साजना ।।३।।
"यादव" हरषित सुरेश, वर्षा पुष्पक अशेष ।
गान गन्धव करथि, किन्नर के वाजना ।।४।।

[८]

मं मं मिथिलेश-भवन खेलथि हरि होरी ।
सं सं सं सिय सरोज अजब मिलल जोरी ।।१।।
रं रं रं रंग झरय गं गं गुलाल उड़य ।
नं नं सभ नृत्य करय मिथिला-किशोरी ।।२।।
जं जं जं जनक नृपति कं कं कोशल-भुपाल ।
यं यं "यादव" नेहाल विनवति करजोरी ।।३।।

[९]

खेलैलौं फगुआ खेला रहलि छी,
खेला खेला कए सेला रहलि छी ॥१॥
राम रघुवर सिय सुहागिनि,
सिनेह सरिता वहा रहलि छी ॥२॥
प्रमोद उपवन, वसंत प्रमुदित,
उमंग अनुपम देखा रहलि छी ॥३॥
पूर्णिमा-निशि, हँसथि निशिपति,
ज्योत्सना में नहा रहलि छी ॥४॥
राम-सिय-पद, मधुर "यादव",
हृदय हँसि हँसि लगा रहलि छी ॥५॥

[१०]

मारे पिचकारी सिया, राम के वदन पर ॥१॥
रंग रतनारी हाथ कनकक पीचकारी।
कनक पुनरि मारय अपन सजन पर ॥२॥
राम सन वर दुलहिनि सिय सन नहिं।
"यादव" कहथि विधि दोसर रचल नहिं ॥३॥

[११]

निरखु सखि राम सियाजोक जोरी ॥१॥
श्याम राम अभिराम मनोहर,
सिय सुन्दरि अति गोरी ॥२॥
अति उमंग आनन्द परस्पर,
हंसि हंसि खेलथि होरी ॥३॥
"यादव" पुनि अवसर नहिं पाएब,
नेह सरस कर चोरी ॥४॥

[१२]

के अएलाह अए कतए कहाँ सँ,
कोना खेलाएब होरी रे ॥१॥
ई घनश्याम सिया विधुवदनी,
कोना लगाएब जोरी रे ॥२॥
ई स्नातक मुनिवर कौशिक के,
ई मिथिलेश-किशोरी रे ॥३॥
"यादव" श्याम राम नहिं मानथि,
खेलथि जोराजोरी रे ॥४॥

[१३]

रचलनि राम सिय-मुख रंग ॥१॥
नारि नर मिथिलाक नाचथि,
सहित सरस उमंग ॥२॥
इन्द्र नाचथि शचिय नाचथि,
पारवति अरधंग ॥३॥
यक्ष नाचथि यक्षिनी लय,
रसिक संग अनंग ॥४॥
चल अचल भूगोल नाचथि,
प्रकृति पुरुषक संग ॥५॥
राम-सिय-पद हृदय "यादव",
राखु सतत अभंग ॥६॥

[१४]

सिय खेलथि फगुआ उमगि उमगि ॥१॥
सखिगण नाचथि झमकि झमकि ॥२॥
सुरगण "यादव" सुमन लुटावथि,
सुर-नारी गावथि, मुसकि मुसकि ॥३॥

[१५]

॥ रसिया ब्रज के ॥

नागिन लहरय केश, सियाजीक नागिन लहरय केश ॥
होरी खेलथि राम जानकी पावन मिथिला देश ॥१॥
जनकनृपति-तनया अलबेली, तन-दुति दमकय फूल चमेली ॥
मणिमय साजल वेश, सियाजीक नागिन लहरय केश ॥२॥
नाचथि चपला जकाँ सहेली, जनकनृपति के हँसैव हवेली ॥
"यादव" मुदित अशेष, सियाजीक नागिन लहरय केश ॥३॥

[१६]

॥ हए की कहिअह वहिना ॥

जखन दुलारी आली मिथिलासुकुमारी हए की कहिअह वहिना ।
रघुवर गगर देल ढारि, हए की कहिअह वहिना ॥१॥
युवती सुहागिन नारी, हँसि ओंघरैली हए की कहिअह वहिना ।
हँसय लागलि सभ नारि, हए की कहिअह वहिना ॥२॥
गगन गगनपति हँसथि विहुँसि हए की कहिअह वहिना ।
हिमगिरि हँसथि त्रिपुरारि, हए कहिअह वहिना ॥३॥
राम-सियाजी-पद अति मन भावय हए की कहिअह वहिना ।
'यादव" हृदय लेल धारि, हए की कहिअह वहिना ॥४॥

[१७]

|| ब्रजक होरी ||

मुनि कौशिक माला कथो लए जपथि ||१||
राम लखन संग भरत शत्रुहन
होरी खेलथि रंग ढारी।
मुनि मटकथि हँसि भाव बतावथि
होरी सखि होरी मधुर मिथिला के कहथि ||२||
मुसकथि राम सिया घोंघटन तर
खिज खिलाथि सभ नारी।
कामिनि रसमयि रास रचावथि
होरी सखि होरी "यादव" चरण चखथि ||३||

[१८]

|| होरी महेशवाणी ||

नहि खेलब गे माय सियाजीक फगुआ भेलइ बलाय ||१||
काल्हुक जनमल देल धकिआय
अपनं चमकि कए गेली अगुआय ||२||
राम के अनूप रूप कहलो ने जाय
सिय के देखय लए मन अकुलाय ||३||
राममय अणु परमाणु ओ कहाय
"यादव" क मन बसु हुनक कहाय ||४||

[१९]

॥ होरी डम्फक ॥

मिथिलापुर फागु मचय भमकय ॥
नव जलधर घनश्याम रामवन -
दामिनि-छवि सिय-तन चमकय ॥ मि० ॥१॥
श्याम तमाल रसाल रामवन
कनकलता सिय-तन लचकय ॥ मि० ॥२॥
"यादव" जगदाधार राम-सिय
पाप ताप निरखत धखकय ॥ मि० ॥३॥

[२०]

सिया सुन्दरि सँ खेलथि फाग, रघुवर नवे नवे ॥१॥
नव उमंग नव नागरि मुसुकथि, अतिशय नव अनुराग ।
रघुवर नवे नवे ॥२॥
नव भूषण नव वसन मनोहर, नव सरबस के त्याग ।
रघुवर नवे नवे ॥३॥
हमरो दिसि करुणाकर तकलनि, धन "यादव" के भाग ।
रघुवर नवे नवे ॥ ४॥

[२१]

होरी जनक-भवन में, खेलथि अवधकुमार ॥ १ ॥
लछुमन हाथ कनक घट रंगक, सिय-कर अबिरक थार ॥२॥
रघुवर-कर कनकक पिचकारी, ऋतुपति छलाह सकार ॥३॥
"यादव" युगल चरण-छवि निरखथि, मानव तन बलिहार ॥४॥

[२२]

सखि कथनपि नहि खेलब रे, रघुपति संग फाग ॥
फाटि गेल पट आँचर रे, लागल तन दाग ॥१॥
बरसय रंग अबिर झर रे, नहि सूझय नैन ॥
मुख कुमकुम भरि देलनि रे, नहि निकसय बैन ॥२॥
डाँटथि रघुवर "यादव" रे, कहि बहुविधि गारि ॥
खिल खिल हँसथि सुहागिनि रे, तन-मन-धन वारि ॥३॥

[२३]

रंग हम ढारब रघुवर सीता सुहागिनि संग ॥
रतन-भवन में बैसलि सीता
रघुपति ढारथि रंग ॥ १ ॥
रंग झरय जे चरण कमल सौं
से सिन्दूरक गंग ॥ २ ॥
गारि सुनाएब मातु कोशिल्या
पीबिकेभरि या भंग ॥ ३ ॥
"यादव" जीवन धन्य हैब जौं
भरि लेताह भरि अंग ॥ ४ ॥

[२४]

झहरि झहरि झरि झरय रंग
सिय खेलथि फगुआ राम संग ॥ १ ॥
लहरि लहरि लड़ि लड़ल नैन
कहि देलक नयना मनक बैन
चित चातक लेलइ कोना चैन
"यादव" जग में बैरी अनंग ॥ २ ॥

[२५]

आब फागुन सजनी कोना क बितब ॥ १ ॥
राम गेला सीतो लए गेला
आब कोना रंग साड़ी भिजंब ॥२॥
राम सिया बिनु शून्य जनक-गृह
"यादव" आस मिलन के उदित ॥३॥



मिथिला रिसर्च सोसाइटी

लहेरियासराय, दरभंगा

देसिल बयना सब जन मिट्ठा
ते तैसन जम्पओ अवहट्ठा

(Mahakavi Vidyapati)

Mithila Research Society has undertaken initiative of digitization of rare and classical literary and research works in Maithili for readers and researchers. This is purely an attempt to preserve and popularize great works in Maithili for present and future generations to know their rich literary treasures. Art and literature shape a civilization. Mithila a cradle of learning has a glorious literary tradition right from Jyotirishwar Thakur and Mahakavi Vidyapati (medieval age) to Chanda Jha (pre independence era) to modern age represented by legends like Pandit Surendra Jha Suman and Pandit Chandranath Mishra Amar.

There is an exhaustive list of author, poet, playwright, critic and likes who chiseled Maithili literature into a great mosaic. Contribution of legends like Abhinav Vidyapati Bhavpritanand Ojha, Pandit Surendra Jha Suman, Kashikant Mishra Madhup, Kanchinath Jha 'Kiran', Ramcharitra Pandey 'Anu', Radhakrishna 'Baher', Yadunath Jha 'Yaduvar', Chhedi Jha 'Madhup', Pulkit Laldas 'Madhur', Deenbandhu Jha, Janardan Jha 'Jansidan', Murlidhar Jha, Jeevan Jha, Kavivar Sitaram Jha, Upendranath Jha' Vyas' Mahamahopadhyaya Umesh Mishra, Harinandan Thakur 'Saroj', Jagdishwari Prasad Ojha, Umapati Tiwari, Mahamahopadhyaya Madhusudan Ojha, Dr Sir Ganganath Jha, Mahamahopadhyaya Parmeshwar Jha, Mahamahopadhyaya Mukund Jha Bakshi, Ayodhyay Prasad Khatri, Nayayacharya Anand Jha, Umanath Jha, Tantranath Jha, Munshi Raghunandan Das, Ramdeo Srivastava, Sahdeo Srivastava, Bindeshwar Mandal, Jagdish Prasad Karna, Girindra Mohan Mishra, Brajnandan Thakur, Kalikumar Das, Subhadra Jha, Harimohan Jha, Babu Bholalal Das, Dinanath Pathak, 'Bandhu', Shailendra Mohan Jha, Babuaji Jha Ajnat, Ramanath Jha, Fazul Rahman Hashmi, Ishnath Jha, Mayanand Mishra,

Chandrabhanu Singh, RC Prasad Singh, Ramdeo Bhabuk, Dr Ramdeo Jha, Jaikant Mishra, Krishnakant Mishra, Pandit Chandranath Mishra Amar, Pandit Govind Jha, Dr. Ramdeo Jha, Ramkishore Jha 'Vibhakar', Dr Ratneshwar Mishra, Ravindranath Thakur, and other can't be forgotten. They dedicated their life to enrich Maithili literature with their outstanding literary creations. Many died unsung despite producing some of the best literary works and sadly they were forgotten. They selflessly devoted their life to serve Mithila and Maithili and bestowed upon us a rich heritage.

It was often felt that books in Maithili are not widely available despite huge demand by readers. Even outstanding literary works became rare due to lack of reprint.

Mithila Research Society is trying to bridge the gap by collecting and converting them in digital form. Mithila Research Society clarifies that this is purely a non-commercial undertaking hence any commercial use of the books is prohibited.

Mithila Research Society was established in 1905 by great poet Chanda Jha along with others. The organization was named as (Mithila Tatva Vimarshini (Mithila Research Society) to promote and preserve culture and literature of Mithila and Maithili besides promotion of teaching and learning of Sanskrit and Maithili, research and printing of popular texts of Mithila, research and publication of books related to history of Mithila

Pandit Chetnath Jha, Babu Keshi Mishra, Mahamahopadhyaya Mukund Jha Bakshi, Mahamahopadhyaya Pandit Gannath Jha, Munshi Raghunandan Das and Babu Tulapati Singh were on forefront along with Chanda Jha. Mahamahopadhyaya Parmeshwar Jha had written history of Mithila named as Mithila Tatva Vimarsha on request of Mithila Research Society. But the organization despite abundance of energy, dedication and hundreds of scholars deeply involved with the activity of the association could not flourish due to lack of desired support from society that was a huge loss for Mithila.

But the organization was revived around year 1965 by Dr Ramdeo Jha under guidance of his senior Shailendra Mohan Jha. So far by the mid of year 2018 Mithila Research Society published over 150 books of Maithili literature and regularly undertakes activities for promotion of Maithili. Dr Ramdeo Jha is heading this institution assisted by Shankardeo Jha.

Vijay Deo Jha
9470369195
8877213104
vijaydeojha@gmail.com